श्रम विभाग ग्रादेश

दिनांक 8 जनवरी, 1987

सं० ग्रो॰ वि॰/एफ०डी॰/90-86/459.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ हरियाणा शहीरी विकास प्राधिकरण (हर्डीकरुवर डिपार्टमेंन्ट), स्टेट ग्राफिस, सैक्टर 16, फरीदाबाद के श्रीमक श्री धनेश्वरयति, पुत्र श्री सुखदर बित, मार्फत मर्कनटाईव इस्पवादीव एसोसिएजन एव-347, न्यू राजेन्द्रा नगर, नई दिल्ली-110060 तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

मीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाह्यनीय समझते हैं:

इसलिए, ग्रंब, ग्रोधोगिक विवाद ग्रिधितियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के अण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-अप-68/15254, दिलांक 20 तून, 1978 है साथ उन्ते हुए ग्रामित्वता पं० 11495-जी-अप-5/11245, दिनांक 2 करवरी, 1958 द्वारा उनत ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित अप न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे अंबंधिक नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जोकि उनत प्रवन्तकों तथा श्रमिक के बीच वा तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद में सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री धने व्ययति की सेवा समाप्ति/र्छटनी न्यायोचित तथा ठीक है? सदि नहीं, तो वह फित राहत का हकदार है? दिनांक 9 जनवरी, 1987

सं० ग्रो० पि०/कुंध्केत/31-86/1120. —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राज है कि मैं • (1) परिवहन आवृत्क, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्र बन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, कैंथल, के श्रीमिक श्री छवीन दास, पुत्र श्री दवाल चन्द, शिकला मोहल्का, गांच व डा० फतेंहपुर, तह० कैंथल, जि० कुंछकेत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामन में कीई बोखोगिक विदाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्यं निक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग वरते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-अन, दिनौक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उनत ग्रिध्सूचना की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, भम्बाला, को विवाद प्रस्त वा उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है दा विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या थी छत्रील दास माल इ पुत्र श्री दयाल जन्द की सेवाओं का समापन न्यामोचित तथा ठीक है ? बंदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं० ओ० वि०/कुम्केव/29-86/1127.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) सचिव, मुख्य अभासक हरियाणा एफ्रीयत्व्वस्य मार्कीटीन वीर्ड, चण्डीगढ़, (2) प्रणासक मार्किट कमेटी कैथल, के श्रमिक श्री भजवक्षार, पुत्र भी बनारसी दास हाउस नं० 64/11 मैल बाजार कैथल, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले मैं कोई भीचोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल इव विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, यब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अवान की गईं भवितयों का प्रयोग करते हुमें हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 मधेस, 1984, द्वारा उक्त अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अन्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तील मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री अजय कुमार पुत श्री बनारसी दास की सेवाश्रों का समापन न्यायोखित तथा ठीक है ? यदि नहीं सी वह किस राहत का हकदार है ?

प्रार. एस. भप्रवाल,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।